समाज मनोविज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ संबंध –

समाज मनोविज्ञान का संबंध मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं जैसे – सामान्य मनोविज्ञान, व्यक्तित्व का मनोविज्ञान आदि से भी है. साथ ही इसका संबंध अन्य सामाजिक विज्ञानों जैसे समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, राजनीतिशास्त्र एवं अर्थशास्त्र से भी काफी है।

→ समाज मनोविज्ञान का सामान्य मनोविज्ञान से संबंध :–

समाज मनोविज्ञान का सामान्य मनोविज्ञान से घनिष्ठ संबंध है। सामान्य मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन उसके उपयुक्त वातावरण में करके मनोवैज्ञानिकों द्वारा उसके बारे में पूर्वकथन करने की कोशिश की जाती है। मानसिक प्रक्रियाओं जैसे – संवेदना, चिन्तन, प्रेरणा, आदि का अध्ययन कर सामान्य मनोविज्ञान में भिन्न-भिन्न नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी किया जाता है। वहीं समाज मनोविज्ञान में इन नियमों एवं सिद्धान्तों का उपयोग व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को समझने में किया जाता है। जैसे – व्यक्ति सामाजिक छवि का निर्माण कैसे करता है?, वह किसी व्यक्ति या वस्तु का प्रत्यक्षण किस प्रकार करता है, वह सामाजिक व्यवहारों को किस प्रकार सीखता है, आदि-आदि। इससे स्पष्ट होता है कि समाज एवं सामान्य मनोविज्ञान एक-दूसरे से काफी संबंधित है।

→ समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व मनोविज्ञान के बीच संबंध :–

समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व मनोविज्ञान दोनों में ही किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। Myers (1988) के अनुसार इन दोनों में घनिष्ठता का इतनी अधिक है कि अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (APA) भी इन दोनों को अलग करने में असमर्थ रहा है। यही कारण है कि इन दोनों शाखाओं के शोधों का प्रकाशन एक ही जर्नल (Journal) में किया जाता रहा है। इस घनिष्ठता के बाद भी इनमें अन्तर इस आधार पर किया जा सकता है कि – व्यक्तित्व मनोविज्ञान

Scanned with CamScanner

में व्यक्ति विशेष के आन्तरिक कार्यों, आंतरिक एवं बाह्य शक्तियों तथा व्यक्तियों के बीच शक्तियों के अन्तर के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता है जैसे- एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा अधिक या कम आक्रमणशील क्यों होता है। दूसरी ओर समाज मनोवैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर भी रहता है कि एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को किस रूप में देखता है, किस तरह सामाजिक परिस्थिति व्यक्ति को अधिक या कम आक्रमणशील, निष्ठुर या दयालु बना देती है आदि-आदि। इससे स्पष्ट होता है कि इन दोनों के बीच घनिष्ठता के बावजूद कुछ भिन्नता भी है।

→ समाज मनोविज्ञान का समाजशास्त्र से संबंध :-

समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र में एक गहरा संबंध है। समाज मनोविज्ञान अपने विषय वस्तु का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों की सहायता लेता है।

समाजशास्त्र संपूर्ण समाज का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इनमें सामाजिक संरचनाओं एवं सामाजिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है जिससे एक विशेष सामाजिक परिस्थिति का पता चलता है। समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। इस तरह समाजशास्त्र समाज मनोविज्ञान को अपनी विषय-वस्तु को समझने में मदद करता है। समाज में व्यक्तियों द्वारा की गयी अन्तःक्रियाओं एवं उनके भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक संबंधों को समझने के लिए एक समाजशास्त्री को समाज मनोविज्ञान द्वारा प्राप्त आँकड़े एवं सिद्धान्तों का सहारा लेना पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों एक-दूसरे से संबंधित हैं और एक के बिना दूसरे को समझना संभव नहीं है।

इन समानताओं के बावजूद इनमें कुछ अन्तर भी है जो कि इनके विषय-वस्तु एवं अध्ययन की विधियों से संबंधित

Scanned with CamScanner

है। समाजशास्त्र के अध्ययन का विषय संपूर्ण समाज है, जबकि समाज मनोविज्ञान समाज में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार एवं उनकी बीच के अंतःक्रियाओं का अध्ययन करता है।

→ समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में संबंध —

समाज मनोविज्ञान का संबंध मानवशास्त्र से भी है। मानवशास्त्र में मानव जाति के शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है जिसके अध्ययन में समाज मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। मानवशास्त्र प्रजातीय विभेद, संकरण, मूल व्यक्तित्व पैटर्न आदि का अध्ययन करता है, जिसका प्रभाव व्यक्तियों के व्यवहार पर पड़ता है। जिससे व्यक्तियों में अन्तःक्रियाएँ होती हैं और समाज मनोविज्ञान के अध्ययन विषय-वस्तु तैयार होता है। इस तरह ये दोनों आपस में संबंध स्थापित करते हैं।

सांस्कृतिक मानवशास्त्र में मानव के सांस्कृतिक पक्षों जैसे - मानव के धर्म, विश्वास, रीति-रिवाज आदि का अध्ययन होता है, जिससे समाज मनोविज्ञान के लिए महत्वपूर्ण आँकड़े प्राप्त होते हैं। दूसरी ओर समाज मनोविज्ञानी भी व्यक्तियों के स्वभाव का अध्ययन करके मानवशास्त्रियों को समाज एवं संस्कृति के मूल तत्वों से अवगत कराते हैं।

इन समानताओं के बाद भी समाज मनोविज्ञान एवं मानवशास्त्र में अंतर भी है। मानवशास्त्र में आदिकालीन मानव तथा उनके शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों के अध्ययन पर बल डाला जाता है, जबकि समाज मनोविज्ञान में व्यक्तियों के व्यवहारों एवं अनुभवों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में किया जाता है। इसप्रकार हम पाते हैं कि दोनों विषयों में गहरा संबंध है।

Scanned with CamScanner